HINDI FILE

SIX SIGMA IAS

Dream | Dare | Deliver

DREAM FOR NATION | DARE TO SERVE | DELIVER WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : JULY 23, 2026

Comprehensive Coverage | Exam-Focused Analysis | Concept Clarity & Insights | Practice MCQs with Explanation | Daily Updates, Better Results

CONTACT INFO:
+91 92896 33341 | +91 96679 33341

EMAIL ID:
info@sixsigmaias.com

WEB PAGE:
www.sixsigmaias.com

ADDRESS:
C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. होम रूल आंदोलन ने संवैधानिक आंदोलन को जन-शिक्षा के साथ जोड़कर राजनीतिक भागीदारी का विस्तार किया।
2. रोलेट एक्ट (Rowlatt Act) मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों से पहले लागू किया गया था और इसके कारण व्यापक राष्ट्रीय विरोध हुआ।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) न तो एक, न ही दो

(d) एक और दो दोनों

उत्तर: (d) एक और दो दोनों

व्याख्या:

दोनों कथन सही हैं। होम रूल आंदोलन ने व्याख्यानों, पर्चों और संगठित अभियानों के माध्यम से राजनीतिक जागरूकता फैलाने में मदद की। 1919 के रोलेट एक्ट ने पूरे भारत में तीव्र विरोध को जन्म दिया और यह मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों की व्यापक राजनीतिक स्वीकृति से पहले आया था।

2. निम्नलिखित में से कौन सा एक पारितंत्र (इकोसिस्टम) में अपघटकों (Decomposers) की भूमिका को सबसे अच्छी तरह स्पष्ट करता है?

(a) वे सौर ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित करते हैं।

(b) वे मृत कार्बनिक पदार्थों को तोड़ते हैं और पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण करते हैं।

(c) वे प्रकाश संश्लेषण द्वारा वायुमंडलीय ऑक्सीजन संतुलन बनाए रखते हैं।

(d) वे शिकार के माध्यम से जनसंख्या के आकार को नियंत्रित करते हैं।

उत्तर: (b) वे मृत कार्बनिक पदार्थों को तोड़ते हैं और पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण करते हैं।

व्याख्या:

जीवाणु (बैक्टीरिया) और कवक (फंगस) जैसे अपघटक मृत पौधों, जानवरों और कार्बनिक कचरे पर क्रिया करते हैं। वे जटिल पदार्थों को सरल पदार्थों में परिवर्तित करते हैं और पोषक तत्वों को वापस पर्यावरण में लौटाते हैं। यह पोषक चक्रों को कार्यशील रखता है और पारितंत्र की स्थिरता का समर्थन करता है।

3. भारत में मुद्रास्फीति (Inflation) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति (Demand-pull inflation) तब होती है जब कुल मांग, कुल आपूर्ति की तुलना में तेज़ी से बढ़ती है।
2. लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति (Cost-push inflation) उच्च मजदूरी, कच्चे माल की कीमतों या ऊर्जा लागत के परिणामस्वरूप हो सकती है।
3. मुख्य मुद्रास्फीति (Core inflation) में खाद्य और ईंधन की कीमतें शामिल होती हैं क्योंकि वे उपभोक्ता टोकरी (consumer basket) के सबसे अस्थिर घटक हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

कथन 1 और 2 सही हैं। मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति तब होती है जब मांग आपूर्ति से अधिक हो जाती है, और लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति तब उत्पन्न होती है जब उत्पादन लागत बढ़ जाती है। कथन 3 गलत है क्योंकि मुख्य मुद्रास्फीति (कोर इन्फ्लेशन) से खाद्य और ईंधन को उनकी उच्च अस्थिरता के कारण आमतौर पर बाहर रखा जाता है।

4. भारत के संविधान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राष्ट्रपति अध्यादेश (Ordinance) केवल तभी प्रख्यापित कर सकते हैं जब संसद के दोनों सदन सत्र में न हों।
2. धन विधेयक (Money Bill) केवल लोकसभा में ही पेश किया जा सकता है।
3. संविधान संशोधन विधेयक को पारित करने में राज्यसभा को लोकसभा के समान शक्ति प्राप्त है।
4. संविधान संशोधन विधेयक पर गतिरोध को दूर करने के लिए संसद की संयुक्त बैठक (Joint Sitting) आयोजित की जा सकती है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

संशोधित स्पष्टीकरण / नोट:

स्रोत की व्याख्या में कथन 2 और 3 को सही माना गया है, जबकि कथन 1 को इस आधार पर गलत माना गया है कि अध्यादेश तब भी लाया जा सकता है जब **कोई एक सदन** सत्र में न हो। कथन 4 गलत है क्योंकि संविधान संशोधन विधेयक के लिए संयुक्त बैठक का प्रावधान नहीं है।

(संवैधानिक रूप से सही उत्तर 'केवल दो' होना चाहिए, लेकिन प्रश्न में दिए गए उत्तर विकल्प के अनुसार (c) सूचीबद्ध किया गया है।)

5. कथन (A): क्षोभमंडल (Troposphere) में समतापमंडल (Stratosphere) की तुलना में ऊंचाई के साथ तापमान अधिक तेज़ी से गिरता है।

कारण 1 (R1): क्षोभमंडल मुख्य रूप से पृथ्वी की सतह से गर्म होता है, जबकि समतापमंडल में ओजोन परत होती है जो पराबैंगनी (ultraviolet) विकिरण को अवशोषित करती है।

कारण 2 (R2): ह्रास दर (Lapse rate) वायुमंडल की सभी परतों में स्थिर रहती है।

सही उत्तर चुनिए:

(a) R1 और R2 दोनों सत्य हैं, और दोनों A की व्याख्या करते हैं।

(b) R1 सत्य है, लेकिन R2 असत्य है।

(c) R1 असत्य है, लेकिन R2 सत्य है।

(d) R1 और R2 दोनों असत्य हैं।

उत्तर: (b) R1 सत्य है, लेकिन R2 असत्य है

व्याख्या:

कथन (A) सही है क्योंकि समतापमंडल की तुलना में क्षोभमंडल में ऊंचाई बढ़ने के साथ तापमान अधिक तेज़ी से घटता है। कारण 1 सही है और कथन की व्याख्या करता है। कारण 2 असत्य है क्योंकि ह्रास दर (लैप्स रेट) वायुमंडलीय परतों में भिन्न होती है और हर जगह स्थिर नहीं रहती है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. पॉलीग्राफ परीक्षण (Polygraph Test) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पॉलीग्राफ परीक्षण को आपराधिक मुकदमे में ठोस साक्ष्य (substantive evidence) के रूप में स्वीकार्य माना गया है, यदि यह अभियुक्त की सहमति से आयोजित किया गया हो।
2. स्वेच्छा से किए जाने पर भी, पॉलीग्राफ परीक्षण के परिणामों को अपने आप में अपराध या निर्दोषता का निर्णायक प्रमाण नहीं माना जा सकता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) न तो एक, न ही दो

(d) उपलब्ध जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a) केवल एक

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है:** *सेलवी बनाम कर्नाटक राज्य (2010)* मामले में सुप्रीम कोर्ट ने माना कि पॉलीग्राफ, नारको-एनालिसिस और बीईएपी (BEAP) परीक्षणों का अनिच्छुक प्रशासन अनुच्छेद 20(3) और अनुच्छेद 21 का उल्लंघन करता है। स्वेच्छा से आयोजित किए जाने पर भी, परिणाम ठोस साक्ष्य नहीं होते हैं और उनके लिए संपुष्टि (corroboration) की आवश्यकता होती है।
- **कथन 2 सही है:** पॉलीग्राफ निष्कर्ष केवल जांच संबंधी सुराग प्रदान करते हैं और स्वतंत्र रूप से अपराध या निर्दोषता स्थापित नहीं कर सकते।

प्रश्न 2. हाल ही में शुरू की गई 'मेडिकल इनोवेशन पेटेंट मित्र पहल' (Medical Innovations Patent Mitra Initiative) का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

(a) अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट मुकदमों के लिए दवा कंपनियों को वित्तीय सहायता प्रदान करना।

(b) स्वदेशी चिकित्सा नवाचारों के लिए पेटेंट दाखिल करने और बौद्धिक संपदा सहायता को सुगम बनाना।

(c) अनिवार्य लाइसेंसिंग के लिए पेटेंट दवाओं का एक साझा डेटाबेस बनाना।

(d) फार्मास्युटिकल विनियमों के सीमा पार सामंजस्य को बढ़ावा देना।

उत्तर: (b) स्वदेशी चिकित्सा नवाचारों के लिए पेटेंट दाखिल करने और बौद्धिक संपदा सहायता को सुगम बनाना।

व्याख्या:

इस पहल का उद्देश्य पेटेंट सुविधा, मार्गदर्शन और बौद्धिक संपदा (IP) सहायता के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा नवाचारों की रक्षा में नवप्रवर्तकों, शोधकर्ताओं, स्टार्टअप्स और संस्थानों की सहायता करना है, जिससे स्वदेशी चिकित्सा प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा मिल सके।

प्रश्न 3. I-2SEA सबमरीन केबल सिस्टम के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस परियोजना का उद्देश्य समुद्र के नीचे फाइबर-ऑप्टिक बुनियादी ढांचे के माध्यम से भारत को पश्चिम एशिया और यूरोप से जोड़ने वाला एक उच्च क्षमता वाला डिजिटल कनेक्टिविटी कॉरिडोर स्थापित करना है।
2. यह प्रणाली भाग लेने वाले क्षेत्रों में डिजिटल लचीलेपन और डेटा कनेक्टिविटी को मजबूत करने के उद्देश्य से की गई व्यापक पहलों का पूरक है।
3. पारंपरिक सबमरीन केबल प्रणालियों के विपरीत, I-2SEA को विशेष रूप से रक्षा संचार के लिए डिज़ाइन किया गया है और यह वाणिज्यिक इंटरनेट ट्रैफिक का वहन नहीं करता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** I-2SEA का लक्ष्य भारत, पश्चिम एशिया और यूरोप के बीच डिजिटल कनेक्टिविटी में सुधार करना है।
- **कथन 2 सही है:** यह सुरक्षित और लचीले अंतर्राष्ट्रीय डिजिटल बुनियादी ढांचे का समर्थन करता है।
- **कथन 3 गलत है:** यह मुख्य रूप से एक वाणिज्यिक दूरसंचार बुनियादी ढांचे के रूप में लक्षित है, न कि एक विशेष सैन्य संचार प्रणाली के रूप में।

प्रश्न 4. बैटरी प्रबंधन प्रणाली (Battery Management System - BMS) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एक बैटरी प्रबंधन प्रणाली बैटरी सेल के वोल्टेज, करंट और तापमान जैसे मापदंडों की लगातार निगरानी करती है।
2. BMS द्वारा किया जाने वाला सेल संतुलन (Cell balancing) बैटरी जीवन और परिचालन सुरक्षा को बेहतर बनाने में मदद करता है।
3. एक बैटरी प्रबंधन प्रणाली सभी परिचालन स्थितियों के तहत थर्मल रनअवे (thermal runaway) को पूरी तरह समाप्त कर सकती है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही **नहीं** हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (a) केवल एक

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** बैटरी स्वास्थ्य की निगरानी करना BMS का प्राथमिक कार्य है।
- **कथन 2 सही है:** सेल संतुलन दक्षता, जीवनकाल और सुरक्षा में सुधार करता है।
- **कथन 3 गलत है:** BMS थर्मल रनअवे के जोखिम को काफी हद तक कम कर सकता है, लेकिन हर परिस्थिति में इसे पूरी तरह से समाप्त नहीं कर सकता।

(चूंकि प्रश्न में गलत कथनों की संख्या पूछी गई है, उत्तर (a) है।)

प्रश्न 5. माचा टी (Matcha Tea) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. माचा को कटाई से पहले विशेष रूप से छाया में उगाई गई चाय की पत्तियों से तैयार किया जाता है।
2. पारंपरिक ग्रीन टी के विपरीत, माचा में पूरी पिसी हुई पत्ती का सेवन शामिल होता है।
3. माचा में प्राकृतिक रूप से कैफीन और एल-थियानाइन (L-theanine) दोनों होते हैं।
4. माचा का उत्पादन किण्वित (fermented) चाय की पत्तियों से किया जाता है, जो इसे ब्लैक टी के समान गुण प्रदान करता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** छाया में खेती करने से क्लोरोफिल और अमीनो एसिड की मात्रा बढ़ती है।
- **कथन 2 सही है:** पिसी हुई पत्ती को पानी में मिलाकर पूरा सेवन किया जाता है।
- **कथन 3 सही है:** माचा में एल-थियानाइन के साथ कैफीन भी होता है।

- **कथन 4 गलत है:** माचा अकिण्वित (unfermented) हरी चाय की पत्तियों से बनाया जाता है, किण्वित पत्तियों से नहीं।

प्रश्न 6. अज़ोव सागर (Azov Sea), जो हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों में देखा गया था, कर्च जलडमरूमध्य (Kerch Strait) के माध्यम से निम्नलिखित में से किस जल निकाय से सीधे जुड़ा हुआ है?

(a) बाल्टिक सागर

(b) एड्रियाटिक सागर

(c) कैस्पियन सागर

(d) काला सागर

उत्तर: (d) काला सागर

व्याख्या:

- **अज़ोव सागर** काला सागर के उत्तर-पूर्व में स्थित एक उथला अंतर्देशीय समुद्र है।
- यह **कर्च जलडमरूमध्य** (Kerch Strait) के माध्यम से काला सागर से जुड़ा हुआ है।
- यह समुद्र रूस और यूक्रेन की सीमाओं से घिरा है।
- इसमें गिरने वाली प्रमुख नदियों में डॉन (Don) और कुबान (Kuban) शामिल हैं।
- मारियुपोल और बर्द्यांस्क जैसे महत्वपूर्ण बंदरगाहों तक पहुँच के कारण यह रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

सामान्य अध्ययन - पत्र I (GS PAPER – I)

प्रश्न 1. "ब्रिटिश भू-राजस्व नीतियों ने न केवल भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को बल्कि इसके सामाजिक और राजनीतिक ढांचे को भी बदल दिया।" उन्नीसवीं सदी के भारत के संदर्भ में इस कथन का परीक्षण कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

उत्तर

परिचय

ब्रिटिश शासन ने मुख्य रूप से औपनिवेशिक राजस्व को अधिकतम करने के लिए स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement), रैयतवाड़ी (Ryotwari) और महालवाड़ी (Mahalwari) प्रणालियों की शुरुआत की। हालांकि ये नीतियां

अपनी प्रशासनिक व्यवस्थाओं में भिन्न थीं, लेकिन उन्होंने सामूहिक रूप से कृषि संबंधों का पुनर्गठन किया, पारंपरिक ग्रामीण संस्थानों को बदला और व्यापक कृषि संकट तथा राजनीतिक चेतना की नींव रखी।

मुख्य भाग

औपनिवेशिक भू-राजस्व नीतियों ने प्रथागत अधिकारों (customary rights) को कानूनी रूप से लागू करने योग्य संपत्ति संबंधों से बदलकर भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को मौलिक रूप से बदल दिया:

- **कृषि अर्थव्यवस्था का व्यावसायीकरण:** स्थायी बंदोबस्त ने जमींदारों का एक ऐसा वर्ग तैयार किया जिन्हें भू-स्वामी के रूप में मान्यता दी गई, जबकि रैयतवाड़ी और महालवाड़ी प्रणालियों ने काश्तकारों के साथ प्रत्यक्ष या सामूहिक राजस्व बंदोबस्त स्थापित किए। इन अंतरों के बावजूद, तीनों प्रणालियों ने कृषि स्थितियों की परवाह किए बिना अत्यधिक राजस्व मांगों को थोप दिया। इसने किसानों को नील, कपास, अफीम और जूट जैसी नकदी फसलों की ओर जाने के लिए मजबूर किया। नतीजतन, भारतीय कृषि वैश्विक बाजारों पर तेजी से निर्भर हो गई, जबकि कई क्षेत्रों में खाद्यान्न की खेती में गिरावट आई।
- **ग्रामीण ऋणग्रस्तता और भूमि का हस्तांतरण:** कराधान के भारी बोझ ने ग्रामीण ऋणग्रस्तता को बढ़ावा दिया क्योंकि किसानों ने अपनी राजस्व देनदारियों को पूरा करने के लिए साहूकारों से भारी कर्ज लिया। समय पर भुगतान न कर पाने के कारण भूमि बेदखली, भूमि स्वामित्व का संकेंद्रण और अनुपस्थित भू-स्वामित्व (absentee landlordism) का उदय हुआ। इसके साथ ही, औपनिवेशिक अधिकारियों ने सिंचाई या कृषि आधुनिकीकरण में बहुत कम निवेश किया, जिससे घटती उत्पादकता और बार-बार अकाल की स्थिति उत्पन्न हुई।
- **सामाजिक संरचना का पुनर्गठन:** इन नीतियों ने पारंपरिक ग्रामीण संस्थाओं को कमजोर करके और जमींदारों, किरायेदारों, बटाईदारों, साहूकारों और भूमिहीन मजदूरों से बने नए सामाजिक वर्गों का निर्माण करके ग्रामीण समाज को भी बदल दिया। बढ़ती असमानता ने भूमि और काश्तकारी अधिकारों पर संघर्ष को तेज कर दिया। औपनिवेशिक कानूनी प्रणाली ने पारंपरिक विवाद समाधान तंत्रों को प्रतिस्थापित कर दिया, जिससे ग्रामीण स्वायत्तता कम हो गई।
- **राजनीतिक चेतना और प्रतिरोध:** राजनीतिक रूप से, कृषि शोषण ने व्यापक किसान प्रतिरोध को जन्म दिया। नील विद्रोह (Indigo Revolt), पावना कृषक आंदोलन (Pabna Movement) और दक्कन दंगों (Deccan Riots) जैसे आंदोलनों ने औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती दी और ब्रिटिश शासन के शोषक चरित्र को उजागर किया। दादाभाई नौरोजी और आर.सी. दत्त जैसे राष्ट्रवादी अर्थशास्त्रियों ने तर्क दिया कि अत्यधिक भू-राजस्व ने भारत से धन के निष्कासन (economic drain) में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे कृषि मुद्दों को व्यापक स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा गया।

निष्कर्ष

ब्रिटिश भू-राजस्व नीतियां केवल वित्तीय सुधार नहीं थीं, बल्कि औपनिवेशिक दोहन के ऐसे उपकरण थीं जिन्होंने भारत के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य को नया आकार दिया। हालांकि उन्होंने औपनिवेशिक प्रशासन को मजबूत किया, लेकिन उन्होंने ग्रामीण गरीबी, सामाजिक असमानता और राष्ट्रवादी चेतना को भी जन्म दिया, जिसके प्रभावों ने स्वतंत्रता के बाद के कृषि सुधारों को प्रभावित करना जारी रखा।

सामान्य अध्ययन - पत्र II (GS PAPER – II)

एनसीईआरटी आधार: स्वतंत्र भारत में राजनीति (कक्षा XII), अध्याय 16 – क्षेत्रीय आकांक्षाएं (Regional Aspirations)

प्रश्न 2. "भारत के ढांचागत संघवाद (federal structure) ने राष्ट्रीय एकता को कमजोर किए बिना क्षेत्रीय आकांक्षाओं को समायोजित करने में उल्लेखनीय लचीलापन प्रदर्शित किया है।" समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

उत्तर

परिचय

भारत की विविधता ने भाषा, जातीयता, संस्कृति और आर्थिक विकास के आधार पर कई क्षेत्रीय आकांक्षाओं को जन्म दिया है। इन मांगों को दबाने के बजाय, भारतीय संविधान ने एक लचीला संघीय ढांचा अपनाया जो राष्ट्रीय अखंडता की रक्षा करते हुए लोकतांत्रिक समायोजन को सक्षम बनाता है।

मुख्य भाग

क्षेत्रीय आकांक्षाएं भारत के बहुलवादी समाज का एक स्वाभाविक परिणाम हैं:

- **लोकतांत्रिक समायोजन और राज्य पुनर्गठन:** राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के माध्यम से राज्यों के भाषाई पुनर्गठन ने यह साबित किया कि क्षेत्रीय पहचानों का लोकतांत्रिक समायोजन राष्ट्रीय एकता को कमजोर करने के बजाय मजबूत कर सकता है। इसी तरह की संवैधानिक प्रतिक्रियाओं के कारण उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना जैसे राज्यों का गठन हुआ, जो भारतीय संघवाद की अनुकूलनशीलता को दर्शाता है।
- **संस्थागत एवं संवैधानिक तंत्र:** संविधान क्षेत्रीय विविधता के प्रबंधन के लिए कई तंत्र प्रदान करता है। सातवीं अनुसूची विधायी शक्तियों का विभाजन करती है, जबकि अनुच्छेद 3 और 371 संसद को राज्यों का पुनर्गठन करने और विशेष क्षेत्रों के लिए विशेष प्रावधान करने की अनुमति देते हैं। अंतर-राज्य परिषद (Inter-State Council), वित्त आयोग और जीएसटी परिषद जैसी संस्थाएं सहयोगात्मक निर्णय लेने को बढ़ावा देती हैं और अंतर-सरकारी संघर्षों को कम करती हैं। 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधनों के माध्यम से लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण ने शासन में स्थानीय भागीदारी को और सक्षम बनाया है।
- **संघीय ढांचे के समक्ष चुनौतियां:** फिर भी, कथित राजनीतिक अलगाव, असमान आर्थिक विकास या पहचान-आधारित शिकायतों के कारण क्षेत्रीय आकांक्षाएं कभी-कभी अधिक स्वायत्तता या अलगाव की मांगों में बदल जाती हैं। उत्तर-पूर्व के कुछ हिस्सों में उग्रवाद, पंजाब में पूर्व में रहा उग्रवाद और कुछ क्षेत्रों में अधिक स्वायत्तता की निरंतर मांगें इन चुनौतियों को दर्शाती हैं। अत्यधिक केंद्रीयकरण, बीते दशकों में अनुच्छेद 356 का बार-बार उपयोग और वित्तीय असंतुलन ने कभी-कभी केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव पैदा किया है।
- **सहयोगी संघवाद की दिशा में हालिया पहल:** प्रतिस्पर्धी और सहकारी संघवाद, कराधान में अधिक हिस्सेदारी (tax devolution) और नीति आयोग के माध्यम से अधिक परामर्श जैसी हालिया पहलों ने सहयोगी शासन को मजबूत किया है। न्यायिक हस्तक्षेपों, विशेष रूप से संघीय संतुलन से संबंधित मामलों में, ने भी संवैधानिक सिद्धांतों को सुदृढ़ किया है।

निष्कर्ष

भारत का अनुभव यह दर्शाता है कि क्षेत्रीय आकांक्षाओं को संबोधित करने में बलपूर्वक केंद्रीयकरण की तुलना में लोकतांत्रिक समायोजन अधिक प्रभावी है। सहकारी संघवाद को मजबूत करना, न्यायसंगत विकास सुनिश्चित करना

और संवैधानिक स्वायत्तता का सम्मान करना क्षेत्रीय पहचान और राष्ट्रीय एकता दोनों को बनाए रखने के लिए आवश्यक रहेगा।

सामान्य अध्ययन - पत्र III (GS PAPER – III)

एनसीईआरटी आधार: मानव भूगोल के मूल सिद्धांत (कक्षा XII), अध्याय 20 – परिवहन एवं संचार (Transport and Communication)

प्रश्न 3. "इक्कीसवीं सदी में कुशल परिवहन और संचार नेटवर्क आर्थिक विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय एकीकरण के महत्वपूर्ण निर्धारक बन गए हैं।" विश्लेषण कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

उत्तर

परिचय

परिवहन और संचार लोगों, वस्तुओं, सेवाओं और सूचनाओं की आवाजाही को सुगम बनाकर आधुनिक आर्थिक प्रणालियों की रीढ़ का निर्माण करते हैं। तेजी से परस्पर जुड़ती दुनिया में, टिकाऊ विकास, रणनीतिक सुरक्षा और संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए मजबूत बुनियादी ढांचा अपरिहार्य हो गया है।

मुख्य भाग

कुशल परिवहन और संचार अवसंरचना बहुआयामी विकास को गति प्रदान करती है:

- **आर्थिक विकास और रसद दक्षता:** कुशल परिवहन अवसंरचना रसद (logistics) लागत को काफी कम करती है, बाजार तक पहुंच को बढ़ाती है और औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देती है। राजमार्ग, रेलवे, बंदरगाह, अंतर्देशीय जलमार्ग और हवाई अड्डे उत्पादन केंद्रों और उपभोक्ता बाजारों के बीच निर्बाध कनेक्टिविटी सक्षम करते हैं। **पीएम गति शक्ति**, **भारतमाला परियोजना**, **सागरमाला** और **डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर** जैसी पहल आर्थिक दक्षता में सुधार के लिए एकीकृत बुनियादी ढांचा योजना पर भारत के जोर को दर्शाती हैं।
- **डिजिटल अर्थव्यवस्था और शासन:** डिजिटल अर्थव्यवस्था में संचार नेटवर्क ने समान महत्व हासिल कर लिया है। ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी, 5G तकनीक, भारतनेट और डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) के विस्तार ने ई-गवर्नेंस, वित्तीय समावेशन, टेलीमेडिसिन, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल कॉमर्स को गति दी है। बेहतर संचार प्रणालियों ने आपदा प्रबंधन और प्रशासनिक जवाबदेही को भी मजबूत किया है।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक तत्परता:** राष्ट्रीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य से, परिवहन और संचार अवसंरचना त्वरित सैन्य लामबंदी (military mobilisation), सीमा प्रबंधन और आपातकालीन रसद को सुगम बनाती है। सीमावर्ती क्षेत्रों में रणनीतिक सड़कें, सुरंगें, पुल और उन्नत संचार प्रणालियां परिचालन तत्परता को बढ़ाती हैं। साइबर और सूचना सुरक्षा की रक्षा में अंडरसी केबल नेटवर्क, सैटेलाइट संचार और सुरक्षित डिजिटल अवसंरचना समान रूप से महत्वपूर्ण बन गए हैं।
- **क्षेत्रीय असमानता और पर्यावरणीय चुनौतियां:** हालांकि, क्षेत्रीय असमानताएं बुनियादी ढांचे के विकासात्मक लाभों को सीमित करती हैं। दूरस्थ, पहाड़ी और जनजातीय क्षेत्र अक्सर अपर्याप्त कनेक्टिविटी से जूझते हैं, जिससे सामाजिक-आर्थिक असमानताएं बढ़ती हैं। बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं से जुड़ी पर्यावरणीय चिंताएं, जिनमें प्राकृतिक आवासों का विखंडन और कार्बन उत्सर्जन शामिल हैं, के लिए सावधानीपूर्वक योजना और टिकाऊ निर्माण प्रथाओं की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष

परिवहन और संचार अब केवल भौतिक अवसंरचना नहीं हैं, बल्कि रणनीतिक संपत्तियां हैं जो आर्थिक लचीलेपन, राष्ट्रीय सुरक्षा और समावेशी विकास को प्रभावित करती हैं। भारत की दीर्घकालिक विकासात्मक आकांक्षाओं को प्राप्त करने और वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए एक प्रौद्योगिकी-संचालित, टिकाऊ और एकीकृत अवसंरचना पारिस्थितिकी तंत्र महत्वपूर्ण होगा।

सामान्य अध्ययन - पत्र IV (GS PAPER – IV)

प्रश्न 4. "सत्यनिष्ठा (Integrity) नैतिक शासन की नींव है, लेकिन जवाबदेही (Accountability) के बिना सत्यनिष्ठा जनता का विश्वास हासिल करने में विफल हो सकती है।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

उत्तर

परिचय

सत्यनिष्ठा लोक प्रशासन के प्रमुख मूल्यों में से एक है, जो किसी व्यक्ति के मूल्यों, विचारों, शब्दों और कार्यों के बीच निरंतरता को दर्शाती है। हालांकि, एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में, केवल सत्यनिष्ठा तब तक अपर्याप्त है जब तक कि इसके साथ पारदर्शिता, जवाबदेही और संस्थागत निगरानी न हो। नैतिक शासन का अंतिम मूल्यांकन न केवल व्यक्तिगत ईमानदारी से, बल्कि नागरिकों के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित करने की संस्थागत क्षमता से भी होता है।

मुख्य भाग

सत्यनिष्ठा और जवाबदेही नैतिक शासन के दो पूरक स्तंभ हैं:

- **नैतिक शासन के आधार के रूप में सत्यनिष्ठा:** सत्यनिष्ठा लोक सेवकों को संवैधानिक नैतिकता को बनाए रखते हुए भ्रष्टाचार, पक्षपात और अधिकार के दुरुपयोग का विरोध करने में सक्षम बनाती है। सत्यनिष्ठा रखने वाले अधिकारी से निष्पक्ष रूप से कार्य करने, सार्वजनिक संसाधनों की रक्षा करने और व्यक्तिगत या राजनीतिक विचारों पर जनहित को प्राथमिकता देने की अपेक्षा की जाती है। ऐसा आचरण प्रशासनिक दक्षता को मजबूत करता है और सरकारी संस्थाओं में नागरिकों के विश्वास को बढ़ाता है।
- **संस्थागत तंत्र के रूप में जवाबदेही:** हालांकि, सत्यनिष्ठा काफी हद तक एक व्यक्तिगत गुण बनी रहती है, जबकि जवाबदेही एक संस्थागत तंत्र है जो यह सुनिश्चित करता है कि कार्यों की जांच और समीक्षा की जाए। यदि संस्थागत नियंत्रण कमजोर हैं तो एक ईमानदार लोक सेवक भी मनमाने या गलत तरीके से सूचित निर्णय ले सकता है। इसलिए, लोकतांत्रिक शासन के लिए ऐसे तंत्र की आवश्यकता होती है जो प्रशासनिक कार्यों की लगातार निगरानी, मूल्यांकन और समीक्षा करे।
- **जवाबदेही को मजबूत करने वाले संस्थागत ढाँचे:** सूचना का अधिकार (RTI) अधिनियम, मनरेगा (MGNREGA) के तहत सामाजिक अंकेक्षण (social audit), संसदीय निगरानी, न्यायिक समीक्षा, भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG), सतर्कता संस्थान और डिजिटल गवर्नेंस प्लेटफॉर्म लोक प्रशासन को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाकर संस्थागत निगरानी को मजबूत करते हैं। ये तंत्र स्वविवेक (discretion) को कम करते हैं और निर्णय लेने में सुधार करते हैं।
- **सत्यनिष्ठा और जवाबदेही का सह-संबंध (उदाहरण):** प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) का सफल कार्यान्वयन तकनीक-आधारित सत्यापन और ऑडिट तंत्र के साथ ईमानदार प्रशासनिक इरादे को जोड़ता है। इसके

विपरीत, ऐसे उदाहरण जहां सार्वजनिक अधिकारियों ने व्यक्तिगत ईमानदारी की प्रतिष्ठा के बावजूद अनियंत्रित विवेकाधिकार का आनंद लिया, कभी-कभी प्रक्रियात्मक चूक या मनमानेपन के आरोपों का कारण बने हैं। इस प्रकार, संस्थागत जवाबदेही नागरिकों और ईमानदार अधिकारियों दोनों की रक्षा करती है।

निष्कर्ष

सत्यनिष्ठा लोक प्रशासन की नैतिक नींव बनाती है, जबकि जवाबदेही इसे लोकतांत्रिक वैधता प्रदान करती है। टिकाऊ नैतिक शासन तभी उभरता है जब व्यक्तिगत ईमानदारी को पारदर्शी संस्थानों, कानूनी सुरक्षा उपायों और सक्रिय नागरिक भागीदारी का समर्थन प्राप्त होता है। साथ में, वे एक ऐसा प्रशासन बनाते हैं जो कुशल, भरोसेमंद और संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हो।

समसामयिकी (CURRENT AFFAIRS)

प्रश्न 5. "पशुजन्य युद्ध अभ्यास (PYA) राष्ट्रीय जैव-सुरक्षा (biosecurity) के एक अभिन्न अंग के रूप में पशु स्वास्थ्य तैयारी को मजबूत करने के प्रति भारत के बदलते दृष्टिकोण को दर्शाता है।" वन हेल्थ (One Health) दृष्टिकोण के संदर्भ में इसके महत्व का विश्लेषण कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

उत्तर

परिचय

ज़ूनोटिक (पशुजन्य) बीमारियों की बढ़ती घटनाओं ने मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य के बीच घनिष्ठ अंतर-निर्भरता को उजागर किया है। इस पृष्ठभूमि में, **पशुजन्य युद्ध अभ्यास (PYA)** 'वन हेल्थ' दृष्टिकोण के अनुरूप, समन्वित निगरानी, आपातकालीन प्रतिक्रिया और संस्थागत सहयोग के माध्यम से पशु रोग प्रकोपों के लिए भारत की तैयारी को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल का प्रतिनिधित्व करता है।

मुख्य भाग

राष्ट्रीय जैव-सुरक्षा और वन हेल्थ फ्रेमवर्क के तहत पशुजन्य युद्ध अभ्यास का महत्व:

- **राष्ट्रीय जैव-सुरक्षा के लिए पशु स्वास्थ्य की अहमियत:** पशु रोग न केवल पशुधन उत्पादकता को प्रभावित करते हैं बल्कि खाद्य सुरक्षा, जनस्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता के लिए भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। मनुष्यों को प्रभावित करने वाले उभरते संक्रामक रोगों का एक बड़ा हिस्सा जानवरों से उत्पन्न होता है, जो प्रभावी पशु चिकित्सा तैयारी को राष्ट्रीय जैव-सुरक्षा का एक अनिवार्य घटक बनाता है। PYA सिम्युलेशन अभ्यास, त्वरित प्रतिक्रिया तंत्र और पशु चिकित्सा, जनस्वास्थ्य और आपदा प्रबंधन एजेंसियों के बीच समन्वय के माध्यम से संस्थागत तैयारी में सुधार करना चाहता है।
- **प्रतिक्रिया समय और आर्थिक नुकसान में कमी:** यह अभ्यास बीमारी का जल्दी पता लगाने, प्रयोगशाला समन्वय, क्षेत्र निगरानी और मानकीकृत प्रतिक्रिया प्रोटोकॉल को बढ़ावा देता है। बहु-हितधारकों के बीच अंतर-संचालनीयता (interoperability) को बढ़ाकर, यह बीमारियों के प्रकोप के दौरान प्रतिक्रिया समय को कम करता है और पशुधन मृत्यु दर तथा व्यापार व्यवधानों से होने वाले आर्थिक नुकसान को कम करता है।
- **'वन हेल्थ' (One Health) दृष्टिकोण के साथ एकीकरण:** PYA 'वन हेल्थ' ढांचे का पूरक है, जो यह स्वीकार करता है कि मनुष्यों, जानवरों और पारिस्थितिकी तंत्र का स्वास्थ्य आपस में जुड़ा हुआ है। प्रभावी बीमारी निगरानी के लिए पशु चिकित्सा सेवाओं, चिकित्सा पेशेवरों, पर्यावरण एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों और स्थानीय

प्रशासनों के बीच सहयोग की आवश्यकता होती है। यह एकीकृत दृष्टिकोण जोखिम मूल्यांकन में सुधार करता है, रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) निगरानी को मजबूत करता है और महामारी की राष्ट्रीय तैयारी को बढ़ाता है।

- **विद्यमान चुनौतियाँ और आगे की राह:** इन लाभों के बावजूद, भारत को अपर्याप्त पशु चिकित्सा अवसंरचना, प्रशिक्षित पेशेवरों की कमी, खंडित रोग रिपोर्टिंग प्रणाली और राज्यों में असमान प्रयोगशाला क्षमता जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। PYA जैसी पहलों की प्रभावशीलता को अधिकतम करने के लिए डिजिटल रोग निगरानी को मजबूत करना, पशु चिकित्सा विस्तार सेवाओं का विस्तार करना और आधुनिक नैदानिक बुनियादी ढांचे में निवेश करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

पशुजन्य युद्ध अभ्यास (PYA) प्रतिक्रियात्मक रोग नियंत्रण से निवारक जैव-सुरक्षा प्रबंधन की ओर एक सक्रिय बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। 'वन हेल्थ' दृष्टिकोण के साथ पशु चिकित्सा तैयारी को एकीकृत करके, यह जनस्वास्थ्य, पशुधन संसाधनों और आर्थिक स्थिरता की रक्षा के लिए भारत की क्षमता को मजबूत करता है। इसके दीर्घकालिक उद्देश्यों को महसूस करने के लिए निगरानी, संस्थागत समन्वय और वैज्ञानिक अनुसंधान में निरंतर निवेश महत्वपूर्ण होगा।